International Journal of Sanskrit Research 2015; 1(2): 60-62

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2015; 1(2): 60-62
© 2015 IJSR
www.sanskritjournal.com
Received: 28-12-2014
Accepted: 29-01-2015

विजेन्द कुमार आर्य
शोधच्द्यात्र, संस्कृत विभाग दिल्ली विश्वविद्यालय

Correspondence
विजेन्द कुमार आर्य
शोधच्द्यात्र, संस्कृत विभाग दिल्ली विश्वविद्यालय

भर्तृहरि के मत में शरीरावयवलिङ्ग विचार

विजेन्द्र कुमार आर्य

भर्तृहरि ने वाक्यपदीय में लिङ्गविषयक विवेचन करते हुए लिङ्गसमुद्देश में लिङ्ग के स्वरूप को निर्धारण करने का प्रयत्न किया है वह इस प्रसङ्ग में अपने समय में प्रचलित लिङ्गविषयक सात मतों का उल्लेख करते हैं। ये मत इस प्रकार है।

1. स्तन, केश आदि बाह्य चिन्हों से कहे जाने वाले सम्बन्ध को लिङ्ग कहते हैं।
2. अवयव विशिष्ट स्तन, केश आदि स्वयं ही लिङ्ग हैं।
3. स्तन, केश आदि से अभिव्यक्त 'जाति' लिङ्ग है।
4. सत्त्व, रजस्, तमस् गुणों की अवस्थाओं के आधार पर लिङ्ग व्यवस्थापित है।
5. इस में सत्त्व, रजस्, तमस् गुण ही लिङ्ग है।
6. ऐसा अर्थस्वरूप जिसका ज्ञान शब्द से होता वह लिङ्ग है।
7. शब्दसंस्कार ही लिङ्ग है [1]।

व्युत्पत्तिलभ्य अर्थ

इन मतों का व्याख्यान करने से पूर्व यहाँ पर लिङ्ग का व्युत्पत्तिलभ्य अर्थ क्या है इस पर विचार करते हैं। लिङ्ग शब्द को 'लिगि चित्रीकरणे' [2] इस धातु से निष्पन्न मानकर 'लिङ्गयत्यदो लिङ्गम्' [3] इस प्रकार निर्वचन किया जा सकता है। 'चित्रीकरण' का अर्थ चिन्हित करना या निशान है। किसी भी वस्तु को चिन्हित करने के दो लाभ हैं। प्रथम वह अन्य वस्तुओं से उस वस्तु को पृथक करता है तथा द्वितीय उस वस्तु को विशिष्ट लक्षण द्वारा लक्षित करता है। जैसे कि गाय का सास्नादि वाला होना अन्य से पृथकत्व का ज्ञान कराता है तथा यह गाय है इस प्रकार चिन्हित भी करता है। नैयायिक लिङ्ग की परिभाषा करते हैं कि 'व्याप्तिबलेनार्थगमकं लिङ्गम्' [4] व्याप्ति के बल से अर्थ का ज्ञान कराने वाला लिङ्ग कहलाता है। जैसे–धूम अग्नि का लिङ्ग है क्योंकि जहाँ धूम होता है वहाँ अग्नि होती है। यहाँ लिङ्ग की व्युत्पत्ति 'गम्लृ गतौ' [5] तथा लीङ् श्लषणे' [6] धातुओं से मानी गई है क्योंकि गति के तीन अर्थ माने गये हैं–ज्ञान, गमन और प्राप्ति। 'लीनम् अप्रत्यक्षम्' अर्थ गमयति ज्ञापयति इति लिङ्गम्' यहाँ भी लिङ्ग की मीमांसा करने पर लिङ्ग को चिन्हित किया होता है। इन व्युत्पत्तिलभ्य अर्थों के आधार पर यदि लिङ्ग का निर्धारण किया जाये तो वह ठीक प्रकार से लिङ्ग का ज्ञान नहीं करवा सकता है। इसका कारण यह है कि हम चिन्ह के आधार पर लिङ्ग ज्ञान नहीं कर सकते हैं। इसी को वाक्यपदीयकार ने स्पष्ट करते हुए प्रथम दो मत तथा तृतीय मत में उद्धृत किया है। इनमें से प्रथम दो मतों को के प्रस्तुत करते हैं।

स्तनकेशादि से सम्बन्ध अथवा विशिष्ट स्तनादिलिङ्ग

लोक में स्त्रीलिङ्ग पुल्लिँङ्ग आदि के चिन्हों को देखकर यह पुल्लिँङ्ग, यह स्त्रीलिङ्ग, यह नपुसंकलिङ्ग है ऐसा प्रतीत होता है। वह यहाँ दो पक्षों से निर्देश करते हैं । स्तन, केश आदि के साथ सम्बन्ध अथवा विशिष्ट स्तन आदि ही लिङ्ग हैं। अर्थात् प्रसव, संस्त्यान के योग्य स्तन, केशसमूह, प्रजनन आदि चिन्हों से अवयवी का सम्बन्ध जो संयोगरूप या समवायरूप है वही लिङ्ग है अथवा उस सम्बन्ध से विशिष्ट स्तन आदि ही लिङ्ग हैं। ये दो पक्ष हैं [7]।

महाभाष्य में 'स्त्रियाम्' [8] इस सूत्र पर यह प्रश्न उठाया गया है कि स्त्री किसे कहते हैं? इसका उत्तर देते है लोक में स्त्री, पुमान्, नपुंसक ये शब्द प्रसिद्ध हैं [9]। यहाँ ध्यातव्य यह है कि पूछा गया था कि स्त्री क्या है? परन्तु उत्तर यह स्त्री, यह पुमान, वह नपुंसक है यह कहकर दिया गया है। अब जब लोक से स्त्रीत्व, पुंस्त्व, नपुंसकत्व का निश्चय कर रहे हैं तो लोक में किस प्रकार स्त्री, पुरुष

नपुंसक का निर्धारण करेंगे? उत्तर देते हैं लिङ्ग को देखकर निश्चय किया जायेगा स्त्री, पुरुष, नंपुसक किसे अभिहित करें। तब लिङ्ग के विषय में पतञ्जलि कहते हैं कि स्नतकेशवती स्त्री होती है तथा लोमों वाला पुरुष होता है और जो दोनों के सदृश होता है परन्तु जिमसें स्त्रीत्व या पुंस्त्व का अभाव होता है अथवा स्त्रीत्व तथा पुंस्त्व का जिसमें अभाव है वह नपुंसक है [10]।

अम्बाकर्त्रीकार इसका विवेचन करते हुए कहते हैं कि नपुंसक में स्त्रीत्व तथा पुंस्त्व दोनों प्रकार के अभाव हैं, ऐसा मानते हैं तो अव्यय तथा तिङन्तरूपों में नपुंसकत्व है, ऐसा मानना पडेगा क्योंकि अव्यय और तिङन्त शब्दों में पुंस्त्व तथा स्त्रीत्व का अभाव होता है। साथ ही उनके अर्थात् अव्यय तथा तिङन्त रूपों के अर्थों में भी पुंस्त्व तथा स्त्रीत्व का अभाव होगा। तथा यदि माने कि स्त्रीत्व तथा पुंस्त्व का अभाव तो है परन्तु स्त्रीत्व तथा पुंस्त्व के सदृश है, वह नपुंसक है तो यहाँ दोनों के सदृश ऐसा कहने पर 'कुक्कुटमयूर्यौ' इत्यादि समास में नपुंसकत्व की आपत्ति होगी [11]।

परवल्लिङ्गं द्वन्द्वतत्पुरुषयोः इस सूत्र से द्वन्द तथा तत्पुरुष समास का पर अर्थात् उत्तरपद के समान लिङ्ग होता है। समास में जब प्रत्येक पद का लिङ्ग समान न हो भिन्न हो तो कौन–सा लिङ्ग माना जाए? द्वन्द्व समास में तो सारे पद प्रधान होते हैं इसलिए किसी भी पद का लिङ्ग माना जा सकता है। अतः नियम किया कि परवत् लिङ्ग ही हो।

कुक्कुटश्च मयूरी च कुक्कुटमयूर्य्यौ।
मयूरी च कुक्कुटश्च मयूरीकुक्कुटौ।।

इन समासों में समुदायरूप में न पुंस्त्व है और न ही स्त्रीत्व है अतः इस 'कुक्कुटमयूर्यौ' इत्यादि समासों में नपुंसकत्व की आपत्ति होगी, जो अभीष्ट नहीं है [12]।

इस स्थिति में अम्बाकर्त्रीकार कहते हैं कि दूसरे लिङ्ग का अभाव होने पर लिङ्गत्व रूप से समान होने से स्त्रीत्व तथा पुंस्त्व को छोड़कर जब अन्य लिङ्ग विद्यमान है तो वही नपुंसकलिङ्ग है [13]।

महाभाष्यकार ने जो स्त्रीत्व का लक्षण बताते हुए 'स्तनकेशवती' कहा है इस प्रयोग में 'स्तनकेश' इस शब्द से मतुप् का प्रयोग सूचित करता है कि स्तन और केश शरीर के अवयव हैं जो संयोग या समवाय सम्बन्ध से शरीर से जुड़े हुए हैं। यहाँ ध्यातव्य है कि स्तन शरीर से समवाय सम्बन्ध से और केश संयोग सम्बन्ध से जुड़ा है। वाक्यपदीयकार के अनुसार यही सम्बन्ध जो संयोग या समवायरूप है वही लिङ्ग है। इसके साथ ही यह जानना भी आवश्यक है वह शरीर जिसमें स्तन तथा केश की दृष्टि से स्त्रीत्व स्वीकार किया गया है। उसी शरीर के स्तन तथा केश के अतिरिक्त और भी अन्य अवयव होते हैं यद्यपि उन अङ्गों का शब्दशः निर्देश नहीं किया है 'स्तनकेश' इस शब्द को उपलक्षण मानकर उनका ग्रहण कर लेना चाहिए और उन्हें भी लिङ्ग का लक्षण स्वीकार करना चाहिए [14]।

यहाँ प्रश्न उपस्थित होता है कि यदि ऐसा मानेंगे कि लिङ्ग से ही स्त्रीत्व तथा पुंस्त्व का ज्ञान होता है तो 'भ्रूकुस' [15] इस शब्द में स्त्रीत्व की विवक्षा में स्त्रीलिङ्ग प्रत्यय टाप् की प्राप्ति होगी जो अभीष्ट नहीं है। दूसरी बात यह है कि 'त्वं खरकुटी पश्य' इस प्रयोग में 'खरकुटी' [16] शब्द को 'तस्माच्छसो नः पुंसि' [17] से नत्व की आपत्ति हो जायेगी क्योंकि 'खरकुटी' इस प्रयोग में ब्राह्मण का विशेषण है जो कि पुंस्त्व का वाचक है।

इसी भांति लिङ्ग का यह लक्षण स्वीकार करने से खट्वा और वृक्ष के इन शब्दों के सन्दर्भ में लिङ्ग सम्बन्धी दोष की आपत्ति होगी। खट्वा इस शब्द में स्त्रीत्व का तथा वृक्ष इस शब्द में पुंस्त्व सम्बन्धी लिङ्ग के लक्षण का अभाव होने पर 'खट्वा' वृक्षः यह प्रयोग नहीं सिद्ध होते हैं। 'खट्वा' इस प्रयोग में स्त्रीत्व का अभाव होने से स्त्रीलिङ्ग प्रत्यय टाप् नहीं लगाया जा सकता तथा वृक्ष में पुंस्त्व के अभाव में वृक्षः इस प्रकार पुल्लिँङ्गप्रयोग नहीं सिद्ध होता है [18]।

इस प्रकार यह लिङ्ग के लक्षण दोष युक्त हैं तथा लिङ्ग ये लक्षण पूर्ण रूपेण लिङ्ग सम्बन्धी प्रयोग को नहीं दर्शाते हैं।

सन्दर्भ

1. स्तनकेशादिसम्बन्धो विशिष्टा वा स्तनादयः।
   तदुपव्यञ्जना जातिर्गुणावस्था गुणास्तथा।।
   शब्दोपजनितोऽर्थात्मा शब्दसंस्कार इत्यपि।
   लिङ्गानां लिङ्गतत्त्वज्ञैर्विकल्पाः सप्त दर्शिताः।।
   वा.प.3.13,पृ.130.सम्पादित के.ए.सुब्रह्मण्य अय्यर–1973, पूना
2. धातुपाठ – पृ.–51
3. तर्कभाषा – पृ.–79
4. धातुपाठ – पृ.–21
5. धातुपाठ – पृ.–30
6. धातुपाठ –
7. लोके यद् लिङ्गम्...लिङ्गमिति पक्षद्वयम्। अम्बा.वा.प.लि.पृ. 711
8. अष्टा. 4–1–3
9. स्त्रियामित्युच्यते, का स्त्री नाम? लोकतः। लोकतः ऐते शब्दाः प्रसिद्धाः स्त्री 'पुमान्नपुंसकमिति।'म.भा..– 4 पृ–18
10. किम्पुनर्लोके दृष्टवैतदवसीयते – 'इयं स्त्री, अयं पुमान्, इदं नपुंसकमिति? लिङ्गम्। किम्पुनस्तद्?
    स्तनकेशवती स्त्री स्याल्लोमशः पुरुषः स्मृतः।
    उभयोरन्तरं यच्च तद्भावे नपुंसकम्।। म.भा. – 4–1–3
11. तदभावे नपुंसकमित्यु .... उपात्तम्।। अम्बा.वा.प. लि., पृ. 712
12. अष्टा– 2–2–46
13. यत्रलिङ्गान्तराभावे सति लिङ्गत्वेन तुल्यजातीयं स्त्रीपुंसव्यतिरेकेण = स्त्रीपुंसलिङ्गव्यतिरिक्तं लिङ्गान्तरं वर्तते सोऽर्थो नपुंसकलिङ्गयुक्त इत्यर्थः।। – अम्बा.वा.प.लि., पृ.–712
14. स्तनकेशादि सम्बन्ध इत्यत्र ...गृह्यन्ते।। अम्बा.वा.प.लि., पृ.–712
15. स्त्रीवेशधारी नट को भ्रूंकुस कहते हैं।
16. केश तथा लोम से युक्त ब्राह्मण
17. अष्टा.
18. खट्वावृक्षयोः स्त्रीत्वपुंस्त्वलिङ्गयोरदर्शनात् – खटवावृक्षौ न सिध्यतः। 'खट्वा' इति स्त्रीत्वाभावाट्टाप् न सिध्यति वृक्षे च पुंस्त्वाभावात्–वृक्षः इति पुंसि प्रयोगो न सिद्धयतीति। अम्बा.वा.प. लि., पृ.–713

सन्दर्भ–ग्रन्थ सूची
वर्णानुक्रमानुसारिणी

अभ्यंकर के.वी. लिमये	वाक्यपदीयम्, भण्डारकर ओरियण्टल, रिसर्च इंस्टिट्यूट, पूना – 1975
अय्यर सुब्रह्मण्य	भर्तृहरि हि. अनु. रामचन्द्र द्विवेदी राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 1981
	वाक्यपदीय पदकाण्ड ;हेलाराज टीका प्रकीर्ण प्रकाश डेकन कॉलेज पूना, 1973
	वाक्यपदीय ब्रह्मकाण्ड स्वोपज्ञवृत्ति पद्धति डेकन कॉलेज, पूना, 1966
आप्टे, वामन शिवराम	संस्कृत हिन्दी कोश, न्यु भारतीय बुक कॉरपोरेशन, दिल्ली, 2009
ईश्वर कृष्ण	सांख्यकारिका तत्त्वकौमुदी सहित सं रामाशङ्कर भट्टाचार्य, मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी, 1967
उपाध्याय बलदेव	काशी की पाण्डित्य परम्परा विश्वविद्यालय प्रकाशन,वाराणसी,1983
	संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास, उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान, लखनऊ, 2001
कौण्डभट्ट	वैयाकरणभूषणसार, सम्पादक प्रभाकर मिश्र, वाराणसी, श्री सम्वत्, 2029
त्रिपाठी, रामप्रसाद	पाणिनीय व्याकरणे प्रमाण समीक्षा, वा. सं विश्वविद्यालय, वाराणसी, 1972

त्रिपाठी, रामसुरेश — संस्कृत व्याकरणदर्शन, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 1972

त्रिवेदी, क्षेमकरणदास — गोपथ ब्राह्मण, सं.–प्रज्ञा देवी एवं मेधा देवी, चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, दिल्ली – 1993

द्विवेदी, कपिलदेव — अर्थविज्ञान और व्याकरणदर्शन हिन्दुस्तान एकेडमी, उत्तर प्रदेश, इलाहाबाद, 1951

नागेश — वैयाकरण सिद्धांत मंजूषा, सम्पा. भागीरथ प्रसाद त्रिपाठी, सं., सं. वि., वाराणसी, 1977

पतजञ्लि — व्याकरण महाभाष्य ;प्रदीप – उद्योत सहित सम्पा. – गुरुप्रसाद शास्त्री, भाग–1,2,3,4,5,6, प्रतिभा प्रकाशन, दिल्ली – 2001

पाणिनीय — अष्टाध्यायीसूत्रपाठ, सम्पादक – पं. ब्रह्मदत्त जिज्ञासु, रामलाल कपुर ट्रस्ट – 2001

धातुपाठ, रामलाल कपूर ट्रस्ट, बहालगढ़, सोनीपत, हरियाणा।

लिङ्गानुशासन और शान्तनव फिटसूत्र, स. – विरजानन्द देवकरणिः, हरियाणा साहित्य संस्थान, गुरुकुल झज्जर, जिला–रोहतक, 1977

उणादिकोष, सम्पा.–सत्यव्रत शास्त्री, सत्यसदन, चन्देरिया, चित्तौड़गढ़, राजस्थान 1997

पाण्डेय, रामाज्ञा — व्याकरणदर्शन प्रतिमा, सं.–रामगोविन्द शुक्ल, सं.सं. वि. विद्या., वाराणसी, 1979

भर्तृहरि — वाक्यपदीय ब्रह्मकाण्ड, ;पं. सूर्य नारायण शुक्ल कृत भाव प्रदीप टीका सं. रामगोविन्द शुक्ल, काशी सं.सि. वाराणसी

वाक्यपदीय ब्रह्मकाण्ड, सं. शिवशङ्कर अवस्थी, चौखम्भा विद्याभवन, वाराणसी, 1990

मिश्र, केशव — तर्कभाषा, सं. श्री निवासशास्त्री साहित्य भण्डार, मेरठ, 2011

मीमांसक, युधिष्ठिर — संस्कृत व्याकरण शास्त्र का इतिहास भा. .1.2 वाराणसी, सम्वत्, 2019

वर्मा, सत्यकाम — व्याकरण की दार्शनिक भूमिका, मुन्शीराम मनोहरलाल, दिल्ली, 1971

भाषातत्व और वाक्यपदीय मुन्शीराम मनोहरलाल, दिल्ली 1968

वामन, जयादित्य — काशिका, न्यास पदमंजरी संहिता सम्पादक, डॉ. जयशङ्कर लाल त्रिपाठी एवं डॉ. सुधाकर मालवीय, तारा बुक एजेन्सी, वाराणसी, 1988

विश्वबन्धु — ऋग्वेद, विश्वेश्वरानन्द वैदिक – शोध संस्थान – होशियारपुर, 1965

शर्मा, रघुनाथ — वाक्यपदीय ब्रह्मकाण्ड, अम्बाकर्त्री टीका एवं स्वोपज्ञवृत्ति सहित. 1963

वाक्यपदीय वाक्यकाण्ड, अम्बाकर्त्री टीका, स्वोपज्ञ, पुण्यराज, प्रकाश, सहित, 1968

वाक्यपदीय पदकाण्ड, अम्बाकर्त्री टीका, हेला. प्रकाश टीका, जाति, द्रव्य, सम्बन्ध सुमुद्देश पर , 1974

वाक्यपदीय वृत्तिसमुद्देश, ;अम्बाकर्त्री टीका, हेला. प्रकाश टीका सहित, 1977

वाक्यपदीय पदकाण्ड, अम्बाकर्त्री टीका, हेला. प्रकाश टीका, भूयोद्रव्य, गुण, दिक्, साधन, क्रिया, काल, पुरुष, संख्या, उपग्रह, लिङ्ग समुद्देशों पर, प्रकाशन – सं. सं.वि. वाराणसी, 1979

वाक्यपदीय पाठभेदनिर्णय, स.स.वि. वाराणसी, 1980

शास्त्री, रामशरण — पाणिनीय व्याकरणशास्त्रे, वैशेषिक तत्त्व मीमांसा – दिल्ली।

English Books

Cardona George – Panini (A Survey of Research) Motilal Banarsidas,Delhi,1997

Iyer, K.A.S. – Bhartrhari (A Study of the Vakyapadiya in the light of ancient (commentaries) Deccan College, Poona, 1969

Iyer, K.A.S. – English Translation of the Vakyapadiya of Bhartrhari with Vartti, Poona, 1969.

Shastri, Gourinath– The Philosophy of Word and Meaning, Sanskrit College, Calcutta, 1951

Tola Fernand and – Bhartrhari (Language, Thought and Reality)

Carmen Dragonetti (Proceedings of the International Seminar), Delhi, December12-14, 2003), Edited by Mithilesh Chaturvedi) Moti Lal Banarasidas, Delhi.